नेहरू बाल पुस्तकालय



बालकुमारी

राजिंदर कौर

चित्रांकन

मोहम्मद इब्राहीम

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

इंदु को नौकरी के साथ-साथ घर का सारा काम करना बड़ा कठिन लगता था। उसे पुस्तकें तथा पत्रिकाएं पढ़ने का बहुत शौक था। लेकिन जब से अम्मा ने काम करना छोड़ दिया था, उसे अखबार की सुर्खियां तक देखने की फुर्सत नहीं मिलती थी। तीन-चार रिश्तेदारों के घर जाना जरूरी था, लेकिन वह टालती आ रही थी। अपनी मां के पत्र का भी वह महीने भर से उत्तर नहीं दे सकी थी।

''एक जान और इतना बड़ा जहान।'' वह ठंडी आह भरकर खुद से कह रही थी तो उसके पति ने सुन लिया। उन्होंने कहा, ''इंदु, यह मुहावरा तो मैंने कभी कहीं पढ़ा-सुना नहीं।''

''आप कहां सुनेंगे। जिसके सिर पर जहान के सारे काम हैं वही यह सब जाने।''

''तुम्हारी समस्या मैं समझता हूं। पर किया क्या जाये! काम करने वाली तो तुम्हें खुद ही ढूंढ़नी पड़गी।''

''कैसे ढूंढ़ूं''

''जैसे सभी औरतें ढूंढ़ती हैं।''

''मैंने अम्मा से, पड़ोसियों से कह तो रखा है, पर आज के जमाने में कामवाली का मिलना आसान नहीं।''

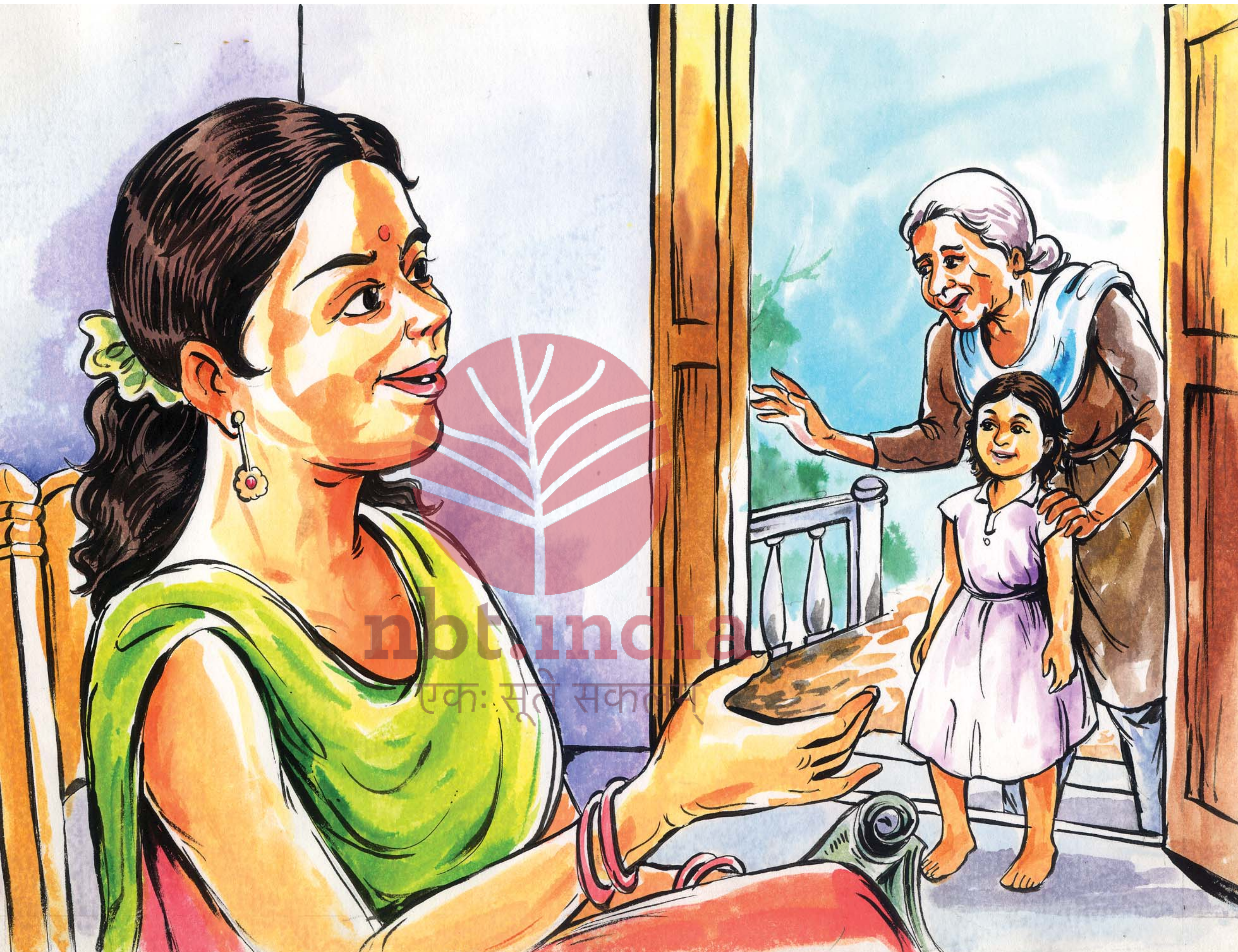
''मम्मी, अखबार में विज्ञापन दे दें?'' उसका बेटा मजाक करने लगा।

''बाप-बेटा मजाक ही कर रहे हो। यह तो हुआ नहीं कि मेरी कुछ मदद ही कर दो।''

''भई, अब बर्तन धोते हुए या झाड़ु हाथ में पकड़े हुए क्या हम अच्छे लगेंगे!''

इंदु सोचती कि इन लोगों से बहस करना बेकार है। वह दूसरे लोगों का उदाहरण देती थी। यूरोप, अमेरिका में पति





कैसे अपनी पत्नियों के साथ घर की जिम्मेदारी निभाते हैं।

उसका पति कहता, ''इंदु, यह हिंदुस्तान है और हम हिंदुस्तानी। तुम यह क्यों भूल जाती हो! ''

काम न करने के लिए उसके पति तथा पुत्र के पास बहुत तर्क थे।

अम्मा ने कई वर्ष उसके घर में काम किया था, लेकिन अब उसके एक घुटने में बहुत दर्द रहता था और वह इंदु के घर की इतनी सीढ़ियां नहीं चढ़ सकती थी।

फिर अम्मा एक दिन एक लड़की को लेकर इंदु के घर आयी।

''बीबी जी, जब तक आपको कोई दूसरी लड़की काम करने के लिए नहीं मिलती, यह बालकुमारी आपका काम करेगी। यह मेरे पोते की बेटी है। पिछले महीने ही मेरा पोता गांव से अपनी बहू और बच्चों को लेकर आया है।''

''लेकिन यह तो बहुत छोटी है, यह क्या काम करेगी।''

''छोटी कहां, बीबी जी। यह अगले बैसाख में जब फसलें कटेंगी तो पूरे नौ साल की हो जायेगी। यह काम करना चाहती है। पर यह सुबह के समय काम करने नहीं आयेगी। सुबह यह स्कूल जाती है। शाम को बर्तन और सफाई करेगी। कपड़े नहीं धोयेगी।''

''इस बच्ची के अभी खेलने-खाने के दिन हैं अम्मा, और इसे तुम काम पर लगा रही हो।'' इंदु बड़ी उलझन में थी।

''मैं तो बीबी जी, आपके भले लिए कहती हूं। नहीं तो आपकी मर्जी। आपका काम नहीं करेगी तो इसकी मां इसे किसी दूसरे घर में लगा देगी। ''

दूसरे दिन शाम को बालकुमारी काम करने आ गयी। इंदु ने सारा काम समझा दिया।

''बालकुमारी, तुम किस कक्षा में पढ़ती हो?'' इंदु ने बात चलाने के लिए पूछा।



''पहली कक्षा में। अभी गांव से आकर ही तो पापा ने स्कूल में दाखिला करवाया है।''

''गांव मे पढ़ती नहीं थी?''

''नहीं। मां कहती थी, पढ़कर क्या करोगी। मेरी मां बिल्कुल नहीं पढ़ी। वह चाहती है कि मैं न पढ़ूं। मेरे पापा बहुत पढ़े हुए हैं। वह मुझे पढ़ाना चाहते हैं।''



इंदु बालकुमारी की भोली बातों पर हंसती रही। उसे पता था कि उसका पिता मैट्रिक पास था। अम्मा के साथ वह एक-दो बार घर आ चुका था। वह एक दुकान पर नौकरी करता था। अम्मा ने यह भी बताया था कि उसकी देखभाल करने वाला उसके पोते के अलावा और कोई नहीं।

''बालकुमारी, तुम्हारे कितने भाई-बहन हैं?''

वह खिलखिला कर हंस पड़ी, ''बहन तो एक भी नहीं। भाई तीन हैं। तीनों मुझ से छोटे हैं। मेरी मां मेरे भाइयों को बहुत प्यार करती है।'' यह कहते हुए वह उदास हो गयी।

''तुम्हें प्यार नहीं करती?''

''नहीं, मुझे तो पापा और अम्मा ही प्यार करते हैं, बस।''

''तुम्हें कैसे पता?'' इंदु ने हाथ का काम छोड़कर बालकुमारी की ओर देखते हुए पूछा।

''मेरी मां मुझे बहुत डांटती है। मारती भी है। खेलने भी नहीं देती। मेरी मां मुझे खाने के लिए भी सारी चीजें नहीं देती। मेरे भाइयों को सब कुछ देती



है। भाइयों को खेलने भी देती है। सुबह जब मैं स्कूल जाने के लिए तैयार होती हूं तो मां मुझे गुस्से से घूरती है। कहती है—'तुम्हारे उम्र में मेरा ब्याह हो गया था। हम गांव में मिट्टी ढोते थे। कई दिन तक बालों में तेल नहीं लगाते थे। कंघी नहीं करते थे।' आंटी, अब मैं तो स्कूल जाती हूं। मैं तो बाल संवार कर रिबन बांध कर ही जाऊंगी। स्कूल में ड्रेस भी धुली हुई पहननी जरूरी है न आंटी!''

इंदु आश्चर्य से उस लड़की को देखती रही। कितना बोलती है यह! क्या सच में इसकी मां इसकी परवाह नहीं करती होगी?

''आंटी, भूख बहुत लगी है। सफाई बाद में करूंगी। पहले मुझे कुछ खाने को दे दीजिए।''

इंदु ने चाय के साथ ब्रेड खाने को दे दी।

सफाई करते हुए वह शो केस में पड़ी चीजों का मुआयना करती रही। शेल्फ पर पड़े पेन स्टैंड में रखे पेन, पैंसिलें निकालती, रखती रही। किताबों की अलमारी के सामने खड़ी होकर कितनी देर तक न जाने क्या सोचती रही।

अब वह रोज शाम को आती। यदि इंदु पढ़ने में व्यस्त होती तो वह किसी न किसी बहाने उससे बात कर ही लेती। बातें करने की वह बहुत शौकीन थी। खाने-पीने के लिए वह स्वयं ही कुछ मांग लेती।

इंदु ने अपने कुछ कपड़े बालकुमारी को दिए कि वह अपनी मां से कहकर अपने लिए ठीक करवा ले। साथ में एक जोड़ी चप्पल भी दे दी।

“आंटी आपने कानों में जो बुंदे पहने हैं वो बहुत अच्छे हैं।”

“अच्छा।”



"मुझे भी ऐसे ही ले दीजिए। आपके पास कोई हों तो आप मुझे दे देंगी?"

"आंटी, आपने यह क्लिप जो बालों में लगाया है, बाजार से कितने का मिलेगा?"

"आंटी, आपने जो चप्पल मुझे दी थी, वह मेरी मां ने ले ली है। अपनी टूटी हुई मुझे दे दी है।"

बालकुमारी की मांगें बढ़ती जा रही थीं। लेकिन वह मांगती इतने भोले ढंग से थी कि इंदु का दिल पिघल जाता। कई बार इंदु को लगता कि वह बहुत लालची होती जा रही है। लेकिन फिर इंदु सोचती कि इस बेचारी के मन में भी कई इच्छाएं हैं। सजने-संवरने की इच्छा प्रत्येक लड़की में बड़ी स्वाभाविक है। छोटी-छोटी चीजें लेकर वह कितनी खुश रहती है और कितना काम कर देती है।



एक दिन बालकुमारी बोली, "आंटी, आप पढ़ती बहुत हैं। क्या पढ़ती हैं?"

"बालकुमारी, मेरे पास कहानियों की एक किताब है, आओ, तुम्हें दिखाऊं। इसमें तस्वीरें भी बहुत हैं।" इंदु उसे अपने पास बिठाकर तस्वीरें दिखाती रही।

"इस तरह की तस्वीरें मैं बना सकती हूं।"

"अच्छा, तुमने कहां से सीखा?"

"हमारी झोंपड़ियों में एक मैडम आती है। वह सब बच्चों का ड्राईंग सिखाती हैं।" इंदु को

आश्चर्य हुआ। भला ऐसी सोशल-वर्कर कौन होगी!

"मैं आपको ड्राईंग बनाकर दिखाऊं?" बालकुमारी बोली।

इंदु ने उसे कागज और पेंसिल दिए और स्वयं पढ़ने में व्यस्त हो गयी। कुछ समय बाद उसने देखा कि बालकुमारी ने कागज पर झोंपड़ी, मोर, तोते आदि के चित्र बना लिए थे। लड़की खुशी से फूली नहीं समा रही थी।



“आंटी, यह कहानी की किताब भी दे दो।”

“वह तभी दूंगी जब तुम अच्छी तरह पढ़ना सीख जाओगी।” इंदु ने कहा।

इधर सर्दी के दिन आ गये थे। बालकुमारी पतली-सी फ्राक पहनकर आ जाती। इंदु ने उसके लिए स्वैटर का प्रबंध किया, मोजे दिए। सिर पर बांधने का स्कार्फ दिया। बालकुमारी लगातार खांसती रहती। उसे ठंड लग गयी थी।

“तुम कोई दवाई क्यों नहीं लेती?”

“आंटी, मां लाकर नहीं देती। वह कहती है कि तुम अपनी आंटी को कहो, वही दवाई लाकर दे।”



इंदु को गुस्सा आ गया। बालकुमारी की मां उसकी परवाह क्यों नहीं करती! हारकर इंदु ही उसके लिए खांसी की दवा लेकर आयी। उसे डर था कि बालकुमारी ज्यादा बीमार हो गयी तो इतनी सर्दी में उसे ही काम करना पड़ेगा। कई बार उसे बालकुमारी पर तरस आ जाता। वह सोचती, देश के कितने बच्चे खाने, खेलने,

और पढ़ने से वंचित रह जाते हैं। लागों की जूठन पर पलते हैं। होश संभालते ही उनके कंधों पर कमाई का भार डाल दिया जाता है। वे बच्चे न बचपन का आनंद ले पाते हैं, न जवानी उनकी दहलीज पर दस्तक देती है। बस जिंदगी का भार ढोते चले जाते हैं, दुख भोगते जाते हैं, दुख जो बहुत लंबे होते हैं। दो-चार साल बाद इस बालकुमारी की शादी हो जायेगी...। यह सोचकर इंदु कांप गयी।

‘‘आंटी, आप वही वाली कहानी की किताब मुझे दे दो। अब तो मैं दूसरी कक्षा की किताब भी पढ़ लेती हूं। आधी छुट्टी के समय मुझे एक लड़की पढ़ाती है।’’

‘‘अच्छा। फिर यह पढ़कर सुनाओ।’’ इंदु ने बच्चों की किताब उसके सामने रख दी। वह सच कह रही थी। अब वह आसानी से किताब पढ़ सकती थी। किसी-किसी शब्द पर अटक जाती थी। लेकिन वर्ण जोड़कर पढ़ते हुए आगे बढ़ जाती।

इंदु उसकी सीखने की इच्छा-शक्ति से बहुत प्रभावित हुई। उसने वह किताब उसे दे दी तथा कुछ और किताबें देने का वादा किया।



एक दिन बालकुमारी किताबों की अलमारी के सामने खड़ी कुछ सोच रही थी।

‘‘आंटी, इस अलमारी में बच्चों की कहानियों की और किताबें हैं?’’

‘‘पहले वाली तुमने पढ़ ली है?’’

‘‘हां, पढ़ ली है। पापा ने भी मदद की थी। बहुत अच्छी कहानियां हैं, आंटी। वह शेर और चूहे की कहानी...हाथी की...बड़ा मजा आया।’’ इंदु ने देखा कि उस लड़की के चेहरे पर खुशी झलक रही थी। बातें करते-करते उसके हाथों, पैरों, आंखों, सबसे प्रसन्नता टपक रही थी।

इंदु को इस लड़की की यह बाल-सुलभ खुशी अंदर तक छू गयी।

‘‘मैं तुम्हें और किताबें लाकर दूंगी।’’

‘‘सच आंटी!’’ वह प्रसन्नता से तालियां बजा रही थी, ‘‘फिर तो भाइयों पर मेरा और रौब पड़ जायेगा।’’

‘‘वह कैसे?’’

आंटी, भाई तो मुझसे छोटे हैं। यूं ही मुझे मारते रहते हैं। मां भी उनका साथ देती है। अब जब से आपने मुझे किताब दी हैं, वे मुझे मारते नहीं। मेरी मिन्नत करते रहते हैं कहानी सुनाने के लिए। तस्वीरें देखने के लिए किताब मांगते हैं। आप दूसरी किताब देंगी तो मेरा रौब और बढ़ जायेगा।

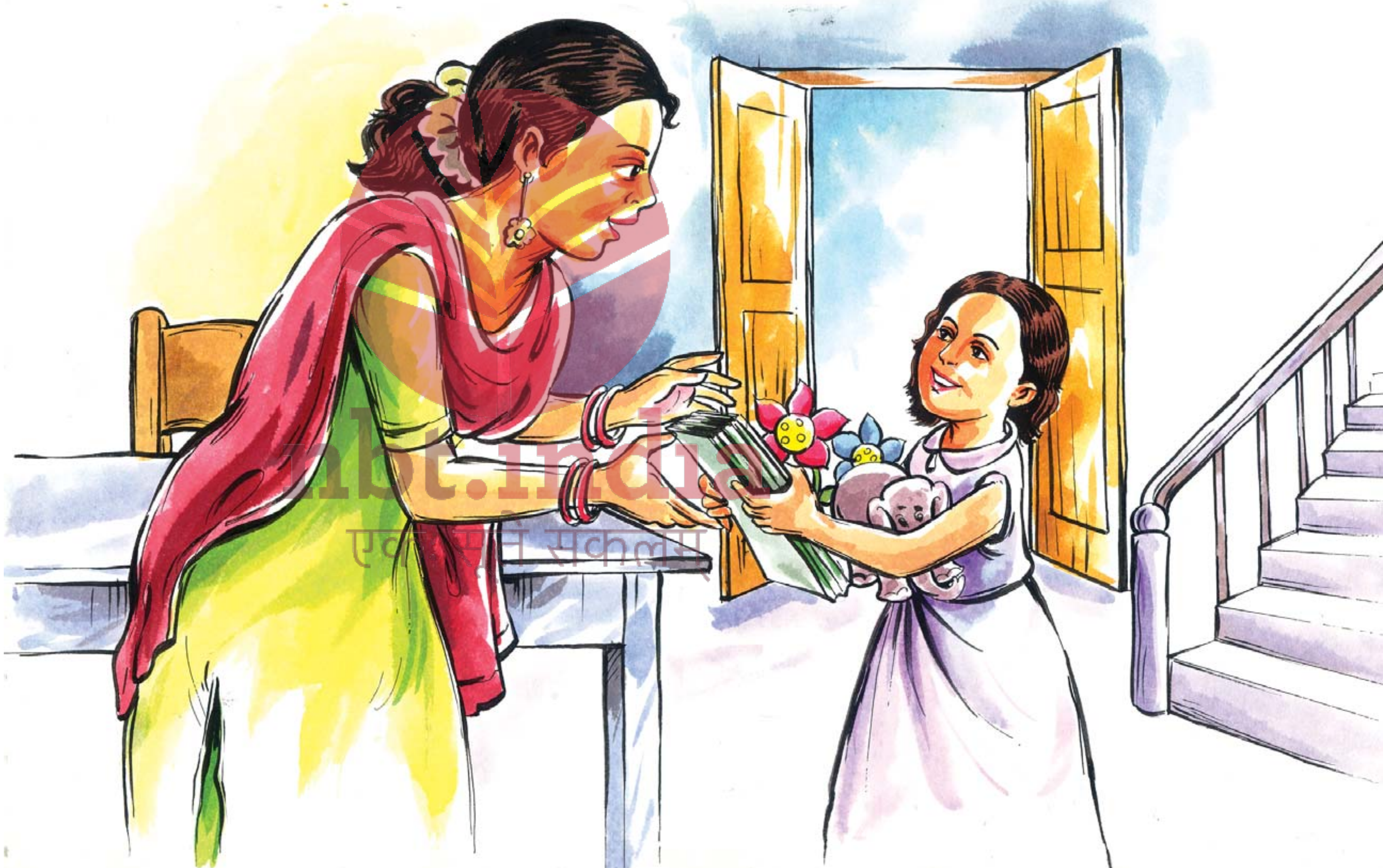
इंदु उस बच्ची के भोलेपन पर मुग्ध होकर उसकी ओर देखती रही। उस दिन इंदु ने उसे खाने-पीने की बहुत सी चीजे दीं। दूसरे ही दिन वह उसके लिए कहानियों की किताबें ले आयी।

एक दिन शाम को बालकुमारी कुछ जल्दी आ गयी।

‘‘आंटी, आज मैं आपके लिए कुछ बनाकर लाई हूं।’’ इंदु ने देखा कि बालकुमारी का चेहरा एक अनोखी खुशी से चमक रहा था।

‘‘आंटी, आप आंखें बंद करो।’’

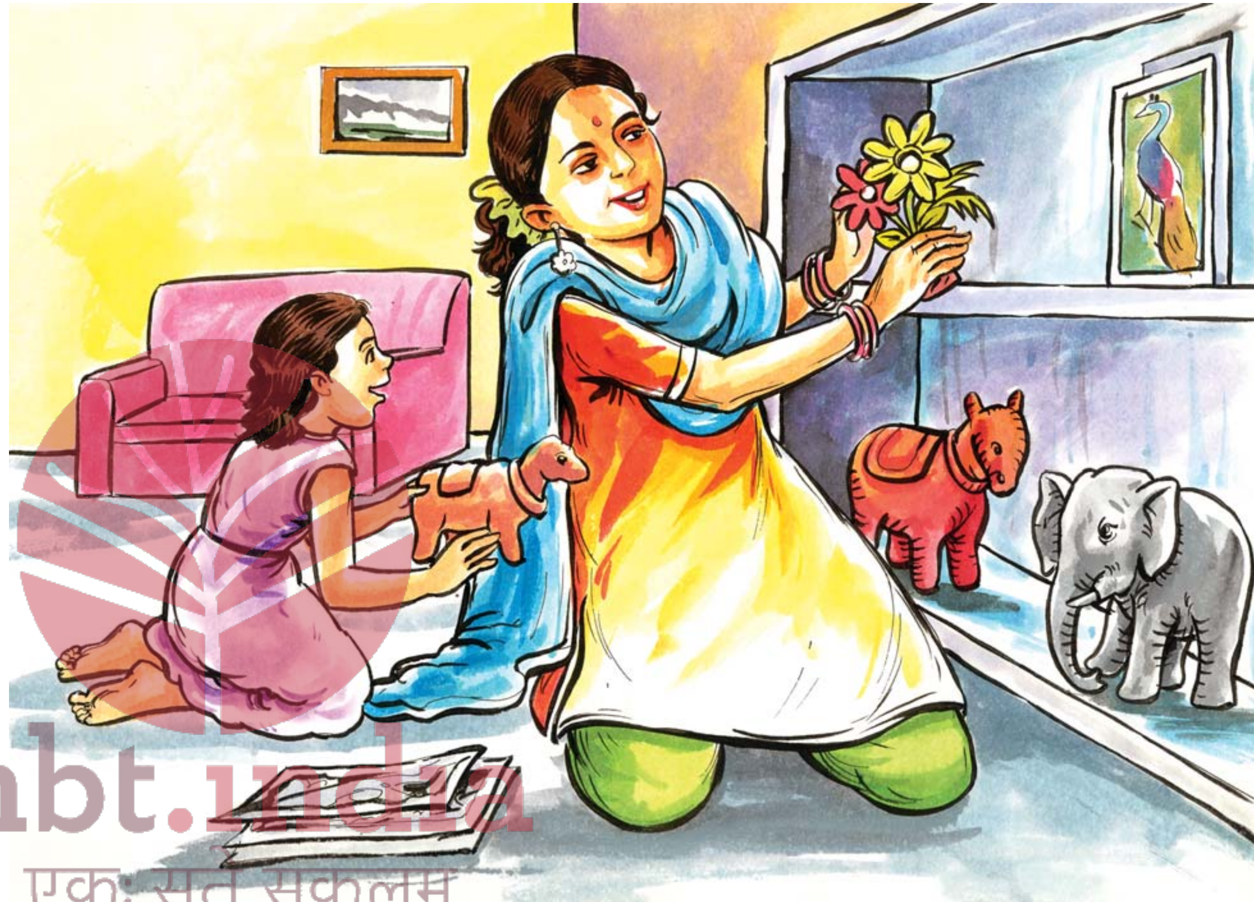
इंदु ने आंखें बंद कर लीं। उसने कुछ समय बाद आंखें खोलीं तो उसकी आंखें आश्चर्य से खुली की खुली रह गयीं। पलंग पर बालकुमारी ने ड्राईंग की कापी, मिट्टी के बने खिलौने, तिनकों से बनी झोंपड़ी और कागज के बने फूल रखे हुए थे। बालकुमारी हाथ बांधे प्रशंसा भरी निगाहों से उन चीजों को देख रही थी। उसके चेहरे से खुशी झलक रही थी।



"यह सब किसने बनाया?" इंदु उन चीजों को छू-छू कर देखते हुए बोली।

"मैंने, आंटी, बालकुमारी ने। मैं यह सब आपके लिए लाई हूं। आप मुझे रोज कितना कुछ देते हो। मैंने सोचा मैं भी अपनी आंटी को कुछ दूं।"

इंदु उस नन्ही सी कलाकार की ओर मुग्ध दृष्टि से देखती रही और उसे गले लगाकर बोली, "आओ, तुम्हारी सारी चीजें इस शो केस में सजाएं।"



शो केस में चीजें रखते हुए इंदु सोच रही थी—'मैं अपने पुराने कपड़े, बची-खुची चीजें देकर स्वयं को कितनी महान, कितनी दानी समझ रही थी। इस लड़की ने मुझे मात दे दी है।'

nbt.india

एकः सूते सकलम्

गोपसंस पेपर्स लिमिटेड, नोयडा द्वारा मुद्रित

ISBN 978-81-237-5567-0

पहला संस्करण : 2009
चौथी आवृत्ति : 2019 *(शक 1940)*

Balkumari (*Hindi Original*)

₹ 35.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
Website: www.nbtindia.gov.in

एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्